गुरुवाणी

जब बड़े कुछ बोलें, उसको अपने दिमाग में, अपने मन में अपने व्यवहार में उतारने की चेष्टा करें।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१५, अंक ४, वाराणसी। शनिवार २८ फरवरी २०१५ ई० सहयोग राशि ४.२५

आचरण एवं व्यवहार

''होली की शुभकामना''

समस्त सुधी पाठकों, सर्वेश्वरी के भक्तगणों एवं उनके परिवार को अघोरेश्वर निनाद परिवार एवं परम पूज्य पीठाधीश्वर जी महाराज की ओर से सतरंगी पर्व, पवित्र होली के अवसर पर बहुत-बहुत शुभकामनायें एवं साधुवाद!

परम पूज्य पीठाधीश्वर सिद्धार्थ गौतम राम जी

प्रत्येक मनुष्य की पहचान, समाज में उसका स्थान, प्रसिद्धि अथवा कुख्याति के मूल में उसका आचरण ही होता है। संयमित, अनुशासनबद्ध, लयोबद्ध जीवनयापन में मानव के द्वारा कार्य करने की पद्धति, प्रक्रिया का दूसरा नाम आचरण है। महज विद्वान या धनवान होने से आचरण का सम्बन्ध नहीं है बल्कि भाव, क्रिया-कलाप से इसका सीधा सम्बन्ध होता है। कहा गया है कि मन भर ज्ञान से कण भर आचरण श्रेष्ठ होता है। मन, कर्म, वचन एवं स्वभाव के समुच्चय को आचरण कहते हैं। साथ ही निराभिमानिता, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता इसके व्यवहारिक पर्यायवाची है। इसी को सौभाग्य भी कहते हैं। जिस किसी को बाल्यावस्था से इस संस्कार से युक्त होने का अवसर उनके माता-पिता, अभिभावकों या शिक्षकों के द्वारा प्रदान किया जाता है, उसे ही जीवन में विजयश्री हासिल होती है। ऐसे व्यक्ति का चाल-चलन स्वमेव ही परिलक्षित होने लगता है। आचरणशील व्यक्ति की प्रतिध्वनि उसके आस-पास या चारों तरफ सबके प्रति समादर की भावना से लबरेज होती है। चाहे वह व्यक्ति अपने परिवार में हो, समाज में हो या राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहा हो। वह सतत् आत्मनिरीक्षण, आत्मावलोकन करने के पश्चात ही दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालता है। उसकी वाणी, विचार प्रभावोत्पादक होते हैं, यदि वह किसी छोटे उम्र के व्यक्ति या बड़े को कुछ समालोचना की दृष्टि से भी कहता है तो उसमें हित-चित समाहित रहता है, उसमें नीचा दिखाने का भाव बिल्कुल नहीं होता। सुविचारित, सुव्यवस्थित जीवन का स्वामी ही एक अच्छे आचरण का स्वामी हो सकता है। आचरण रूपी हीरे की कद्र मानव रूपी वही जौहरी करता है जो इसके अतुलनीय, अतुल्य महत्व को समझता है। ऐसा व्यक्ति स्वप्न में भी किसी का अहित नहीं चाहता, उसके कार्य एवं आचरण से सदैव निर्झरता प्रवाहित होती रहती है।वह हर युग के अनुकूल बदलती परिस्थितियों में मानव के हितोत्थान के लिये सदैव अपने को तत्पर रखता है। वह अपना जीवन-यापन उस कस्तूरी के व्यापारी की तरह करता है कि उसके प्रभा मण्डल से ही ''**जो कुछ गंधी दे नहीं तो भी वास सुवारा**'' की स्थिति बनी रहती है। अच्छे आचरण एवं व्यवहार का व्यक्ति समाज में पहचाना जाता है, उसका तन, मन, चित्त इस ओर इंगित करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व भौतिक उपलब्धियों से नहीं आँका जाता बल्कि वास्तविक सम्पदा तो उसका गरिमामय आचरण ही है, यही उसकी आदर्शता है जो भी उसके साहचर्य में समाज में आता है वह उसके गुणों से अछूता नहीं रहता, बल्कि वह भी चुम्बकीय प्रभाव से आकर्षित होकर अपने को धन्य बनाने में ही गौरवान्वित समझता है समुन्नत आचरण करने का मतलब है कि कई दोषों, दुर्गुणों से अपने आप रक्षित हो जाना!

आचरण के धनी व्यक्ति के द्वारा छोटा या बड़ा कोई कार्य अथवा निर्धारित दायित्वों का निर्वहन सदा सक्रियता के साथ आनंद की अनुभूति के साथ किया जाता है, वह अनर्गल लोभ-लालच, ईर्ष्या अति महत्वाकांक्षी के पीछे कदापि नहीं भागता। उसे अपनी योग्यता पर विश्वास होता है तथा प्रारब्धवश जो कुछ भी अधिक से अधिक उससे बन पड़ता है उसके परिणाम से उसे हार्दिक सन्तोष प्राप्त होता है। ''**देख परायी चुपड़ी मत ललचाये जीव**'' से सदा सावधान रहता है, अन्यथा कम कर्तव्य करके या शार्टकट में अत्यधिक आकांक्षा को पालना सामान्य लोगों को दुष्परिणाम की ओर धकेल देते हैं। वह अपने ही दायरे में रहकर कर्त्तव्य की इतिश्री करता रहता है। दत्तचित्त, एकाग्र होकर अपने लक्ष्य को भेदने में सदैव ईमानदारी से प्रयत्नशील रहता है। कभी इधर, कभी उधर, चंचल चित्त का व्यक्ति केवल बड़ी-बड़ी इच्छायें पालता है, उसके लक्ष्य के अनुरूप कर्त्तव्य एवं आचरण न होने से अंतत: वह दु:ख को ही प्राप्त करता है। अधिक से अधिक धन की लिप्सा, सुख-सुविधा, भौतिकता उसे आकर्षित नहीं कर पाती क्योंकि उसे वह सब पाना रहता है, जो उस व्यक्ति के लिये उत्कृष्टतम होता है तथा अंतत: उसके भविष्य के लिये शुभ एवं सुखद होता है। यह सत्य है कि औघड़ के दरबार में कर्त्तव्यनिष्ठ, आचरणशील, अनुशासित व्यक्तियों को उनके पुरुषार्थ के फलस्वरूप वह नहीं मिलता जो उसकी इच्छा होती है, बल्कि वह मिलता है जो उनके भविष्य के सुनहरे प्रहर का द्वार खोलती है यानी जो उसके लिये अनुकूल, मनभावन होता है वह कभी स्वयं तो संतुष्ट होता ही है उसके परिजन भी परोक्ष रूप में उसके आचरण से प्रभावित होकर सहपथ पर मनन करने लगते हैं तथा जीवन को धन्य धन्य बना लेते हैं। आचरण वन्दनी व्यक्ति ''रहिमन आप ढगाइये, और न ढगिये कोय, आप ढगे सुख होत है, और ढगे दुख होय'' की उक्ति को चरितार्थ करने में, अपने जीवन में धारण करने में ही सुख की अनुभूति करता है वह अल्प परिश्रम के बदले बड़े परिणाम की अपेक्षा नहीं करता, वह बखुबी जानता है कि अघोरेश्वर किसी को योग्यता से अधिक देकर अन्याय नहीं कर सकते, जैसे कि कुशल कार चालक को कार तथा पाइलट को हवाई जहाज ही उपलब्ध होता है।

व्यक्ति का आचरण ही प्रथम दृष्टया उसके व्यक्तित्व की वह आभा है जिससे वह निरन्तर कार्यरत रहने में विश्वास करता है उसके अच्छे आचरण के कारण उसका तन उसके मन के अधीन कत्तई नहीं रहता बल्कि वह आत्मबुद्धि से निर्णय लेता है। वह समाज में उपकार कर प्रतिउपकार की इच्छा नहीं करता बल्कि ''नेकी कर दरिया में डाल'' की उक्ति को चरितार्थ करता है। वह सतत् जाग्रत अवस्था में होकर गुरु की वाणी को शत-प्रतिशत अपने जीवन के क्रिया-कलापों में क्रियान्वित करता है। संकल्प शक्ति को जरा भी कमजोर नहीं होने देता वह निरन्तर क्रियाशील रहकर अपने कर्तव्य पालन में लीन रहता है जिसकी आपूर्ति में उसका आहार-विहार एवं व्यवहार अपने आप सुधरता निखरता रहता है। वह बड़ो की, उनके शुभ कर्मों की, खुलकर हृदय से प्रशंसा करता है अपने मानव जीवन में उदारता बरतते हुये नम्रता, विनयशीलता एवं सच्चरित्रता का दामन थामकर सफल जीवन व्यतीत करता है। वह मानसिक रूप

शेष पृष्ठ दो पर

''वसंत-पर्व''

भारतीय त्योहारों एवं परम्पराओं को हमारे देश में मनाने की प्रथा अति प्राचीन है होली, दशहरा एवं दीपावली तो मुख्य त्योहारों में है तथा इन तिथियों में राष्ट्रीय अवकाश भी घोषित रहता है। इसमें होली यानी रंगों के त्योहार को मनाने की परम्परा निराली है। बसंत पंचमी से ही इस त्योहार की धमक परिलक्षित हो जाती है, शिव-पार्वती यानी शिव-शक्ति के मिलन का पर्व महाशिवरात्रि इसमें चार चाँद लगाती है। काशी सहित अन्य प्रान्तों में इसी तिथि से एक दूसरे के ललाट पर सुर्ख अबीर की परत चढ़ाने में पारस्परिक सौहार्द्र एवं भाईचारे की भावना में अभिवृद्धि होती है होली आते-आते तो न केवल प्राकृतिक रूप से अमराईयों में मंजर गदराने लगते हैं बल्कि व्यक्तियों की अवधारणा में नवस्फुरण की स्फूर्ति हिलोरे मारने लगती है। कोयल की कूक, फाल्गुन गीत के निर्झरता को जैसे आमंत्रण देती है। पारिवारिक जीवन में एक रमणीयता का बोध होता है, संगीत के रागों में वसंत राग का वर्चस्व सर्वत्र गुंजायमान हो जाता है। यद्यपि अपने देश में यह पर्व मात्र औपचारिकतावश होलिका-दहन के पश्चात एक दूसरे पर रंग डालने या कीचड़ डालने तक सीमित नहीं है बल्कि उसमें समाहित है। परिवार, समाज में एक दूसरे के प्रति लगाव, अपनापन तथा सायंकाल बड़ों के पैर पर अबीर रख उनका प्रणाम कर आशीर्वाद लेने एवं एक-दूसरे को शुभकामना के आदान-प्रदान का शुभ सिलसिला तथा सपरिवार लजीज व्यंजन का रसास्वादन से होता है।

आज बदलते परिवेश में यांत्रिक तकनीकी युग में मानवीय मूल्यों की क्षति एवं क्षरण बड़ी ही निर्ममता से अनायास होती जा रही है, शहरी वातावरण में इस पर्व की आड़ में अल्पावस्था बच्चों द्वारा हरे पेड़ों की डालियों को काट कर होलिका दहन के नाम पर जलाना हैं। भीड़-भाड़ वाली मुख्य सड़कों पर रखकर मार्ग अवरुद्ध करना, यातायात को धता बताना तथा दुर्घटनाओं को आमंत्रण देना प्रत्येक वर्ष होली के विद्रूप रूप का साक्षी होता है। दिनोदिन हमारा यह प्रिय त्योहार आनंदहीन प्रेमविहीन होता जा रहा है, जिससे जीवन में सरसता, समरसता तथा परस्पर भाईचारा की भावना जड़वत होती जा रही है जिससे निकटता की जगह निरसता, निरवता छाती जा रही है झोपड़ पट्टियों से लेकर महलों तक विष-पान या मदिरा-पान करने का बढ़ता प्रचलन हमें अंधकार की बदरंगी खाईं की तरफ ही ढ़केल रहा है। आत्मीयता का स्थान नशे के द्वारा निरोहित होता जा रहा है।

अत: अपनी पुरानी मर्यादाओं, परम्पराओं, त्योहारों का पालन कैसे करें। इसके लिये समाज-सुधारकों एवं बुद्धिजीवियों की प्रतीक्षा किए बिना प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने प्रत्येक जागरूक परिवार में ही सुधार का श्रीगणेश किया जाना अपरिहार्य है ताकि प्रेम का रंग परिवार से प्रारम्भ होकर राष्ट्रीय स्तर तक चढ़ता चला जाय एवं आपसी सौहार्द, विश्वास तथा प्रसन्नता के वातावरण में सतत निखार आता रहें।

समाज में एक दूसरे पर रंग डालने की परम्परा एक दूसरे के प्रति शुभकामना एवं खुशियों के आदान-प्रदान का ही द्योतक रहा है, जिसे जीवन में एक पर्व के रूप में स्थान दिया गया है। सांसारिक दु:खों को भुलाकर, तनावग्रस्त जीवन में सतरंगी रंगों को भरने की कला में निपुणता पुन: प्राप्त करनी पड़ेगी जिसे महलों से लेकर झोपड़ पट्टियों तक में सर्वत्र हर्ष, उल्लास व्याप्त करानी पड़ेगी। ताकि सर्वत्र आनंद का वातावरण सृजित हो। इसके लिए हमें तत्पर होकर समाज को, अभिभावकों को, बच्चों को जागरूक करना पड़ेगा। अन्यथा होली का आनन्द रंग बदरंग में बदलता जायेगा जिससे सहज जीवन में असहजता घर करने लगेगी एवं वातावरण खराब होता चला जायेगा। वास्तव में होली के पर्व के पूर्व से ही जन-जन के चेहरों पर उल्लास एवं मुस्कान ही होली के त्योहार के अवसर पर फाल्गुनी स्वागत गान होगा तथा वसंत पर्व के प्राकृतिक उत्सव का हम भरपूर आनंद ले सकेंगे।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

आचरण एवं व्यवहार

से सदैव प्रसन्नचित्त एवं संतुष्ट बना रहता है, ईष्या, निराशा, कुंठा के लिये उसके पास समय का अभाव बना रहता है यदि किसी कारणवश छोटी-छोटी बाते व्यवधान बनकर क्षणिक आने की कोशिश भी करती हैं तो आचरणकर्ता के प्रचण्ड पुरुषार्थ के समक्ष अंतत: नतमस्तक होती है।

हमारा भारतीय इतिहास भी महापुरुषों मनीषियों के उदाहरण से भरा पड़ा है, जिनके आचरण एरां कार्य आज भी हमारे लिये प्रेरणा-स्त्रोत है। महात्मा बुद्ध, ईसा, नानक, कबीर, गुरु रैदास, बाबा कीनाराम से लेकर पृथ्वीराज चौहान, महाराजा प्रताप आदि प्रतापियों के दृष्टान्त भारतभूमि की महानता को आज भी अक्षुण रखने में समर्थ है। उपरोक्त सभी महात्माओं एवं वीर पुरुषों का कर्म एवं आचरण अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधा को तिलांजलि देकर समाज को पूर्ण रूपेण सुखी बनाने में ही खर्च हुआ है एवं ऐसे व्यक्तित्व के धनी महात्मा, महापुरूष, ईश्वर आज भी हमारे मध्य लगातार अहर्निश सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा समाज को स्वस्थ रखने में अपनी आहुति अर्पित कर रहे हैं। पुरुषों, महिलाओं के सत आचरण का अभिप्राय सामान्य मनुष्यों को सद्पथ पर बनाये रखना, कुपथ से बचाना, संकल्प शक्ति जाग्रत करना तथा चित्त में विकार न आने देने का है। गुरु या ईश्वर की कृपा का यह लक्षण है कि हमारे अंदर प्रचण्ड संकल्प शक्ति के ऐसे आचरण का उदय हो जिससे हम चेष्टा करके प्रारब्धजनित कुसंस्कारों का नाश करते हुए पावन एवं पवित्र जीवन-यापन करते रहें। सदैव मानवता के प्रति प्रेम का उद्भव होता रहे, साथ ही अन्याय को सहन न कर तीव्र एवं ससमय प्रतिक्रिया व्यक्त करना भी श्रेष्ठ आचरण के अंतर्गत ही समाविष्ट होता है, जैसा कि मैथलीशरण गुप्त की लेखनी मार्ग प्रशस्त करते हुये कहती है कि **''अन्याय सहकर बैठे रहना ही बड़ा दुष्कर्म है, न्यायार्थ अपने बंधू को भी दण्ड देना धर्म है''** यानी अन्याय करना, जुल्म करना अथवा प्रतिकार न करना कायरता ही नहीं बल्कि दुराचारण एवं हिंसा है।

उपरोक्त गुण एवं आचरण को धारण करने के लिये ही गुरुशरण अथवा गुरु के वचनों का पालन करना श्रेयस्कर है सद्आचरण के महत्व को दृष्टिगत रखते हुये ही ''अघोर वचन शास्त्र'' के अध्यायों के मणियों में उक्त आचरण शीर्षक अध्याय को भी समावेशित किया गया है। जिसे हमारे लोक जीवन में सरलता, सरसता, समरसता लाने के लिये सुगम तरीके से प्रस्तुत किया गया है एवं मानव अपने किसी भी अवस्था में हो, सदैव उसके लिये हितकर ही है। सच्ची कर्तव्यपरायणता, कर्मठता, निरन्तरता की आवश्यकता एक सेवक से लेकर शासक तक तथा एक मंत्री से लेकर संतरी तक की होती है अगर कोई व्यक्ति अच्छा सेवक नहीं है तो वह अच्छा शासक भी उसी भांति नहीं हो सकता जैसे एक कमजोर विद्यार्थी कमजोर शिक्षक ही सिद्ध होता है।

अस्तु इस अमूल्य जीवन के अमूल्य क्षणों का सदुपयोग औघड़ी कृपा की अनुकूलता में इस प्रकार हो कि हमारी आसुरी शक्तियाँ जड़ से खत्म हो, हम सब में दैवीय गुणों का विकास हो, मानवमात्र के प्रति उद्धत प्रेम में अभिवृद्धि हो तथा ईश्वर द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित चलते फिरते मूर्ति के प्रति परस्पर प्रेम, सेवा भाव का उदय हो। दिनोदिन कर्त्तव्य एवं आचरण की कसौटी पर खरे उतरने की हम सबकी कामना बलवती हो, ऐसी सद्प्रेरणा सतत् जीवन-पर्यन्त प्राप्त होती रहे, तो हम जीवित ही जीवन भर स्वर्ग के अधिकारी सरीखे बने रहेंगे। अन्यथा चाहे जितनी भी धन दौलत के हम स्वामी बन जाये, यदि आचरण शुद्ध, सात्विक, सुरुचिपूर्ण सादगीपूर्ण नहीं है तो सदैव शांति का अभाव बना रहेगा एवं बाहर से दिखती विलासिता स्वर्ण-सर्प की भांति निगलने को तत्पर रहेगी। जैसा कि बड़े सरकार परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी की वाणी है कि- **''पापियों के बढ़ते ऐश्वर्य को देखकर धर्मफल में संदेह न करें। फाँसी के मुजरिम को पहले मनपसन्द भोग सामग्री दी जाती है।''**

आवश्यक सूचना

सभी सम्मानित संस्थान के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सदस्यता संख्या 100 के आगे से सभी सदस्यों की सदस्यता निरस्त कर **10 फरवरी दिन मंगलवार 2015** से नया कार्ड एवं सदस्यता संख्या आवंटन संस्थान के प्रधान कार्यालय में किया जा रहा है।

अत: आप सभी सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त तिथि तक प्रधान कार्यालय से सदस्यता फार्म भरकर प्रमाणिक पहचान पत्र की फोटो प्रति एवं दो फोटो के साथ कार्यालय में यथाशीघ्र जमा करें ताकि आप को सदस्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जा सके।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

0542-2277155, मो0: 9794487878

औरों के घर का सिद्ध और कीनाराम के घर का कुत्ता

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

आज जिन महापुरुष की समाधि के उपलक्ष्य में श्रद्धा के पात्र महन्त के गद्दीरोहण पर जिन सज्जनों तथा उपस्थित लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित किया है और जो-जो अपना प्यार दिये हैं, मैं अपनी तरफ से एक तरह से अभिनन्दन करता हूँ। इसीलिए अभिनन्दन करता हूँ कि इस स्थान में जो उपस्थित हैं, चाहे मनुष्य हो, पशु हो, पक्षी हो सभी लोग के लिये जब हम छोटे थे तो कहा जाता था कि ***''औरों के घर का सिद्ध और कीनाराम के घर का कुत्ता''।*** इस वाक्य को लेकर बहुत से साधु लोग अपने को कीनाराम से सम्बोधित करते हैं और व्यक्तियों में एक विचित्र तरह की भावनाएँ भी उत्पन्न करते हैं।

आप जानते हैं कि शराब-गांजा एक तरह से औषधि की जगह इस्तेमाल किया जाता है न कि दिन-रात सेवन करके अपने स्वास्थ्य और अपने को अल्पायु करें और अपने समाज के सामने जो कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व है, उससे अपने को वंचित रखें। प्राय: इससे सम्बन्धित कहने वाले, जो तथाकथित लोग हैं, उन्हें देखकर मन में बड़ा खेद उत्पन्न होता है कि इनका समाज के प्रति कोई भी उत्तरदायित्व नहीं है।

समाज के प्रति उत्तरदायित्व न रखें, पर अपने प्रति भी तो उत्तरदायित्व नहीं रखे हैं। अपना स्वास्थ्य खोकर अल्पायु होते जा रहे हैं। यह समझ बैठे हैं कि यहाँ दारु, गांजा या कुछ उटपटांग बातें करते रहें, यही हमारे सिद्धि का मार्ग होगा। इसी से लोग हमारी प्रशंसा करेंगे, हमें अच्छा समझेंगे। यह सब उन लोगों की गलतफहमी है। उसके कारण वे अपने आपको प्राय: एकांकी पाते हैं और अपने आपको कोसते भी है। इतना कोसते हैं कि अपने आपको कोई दुर्बल मनुष्य उतना नहीं कोसता होगा। आप जो श्रद्धालु सज्जन हैं, आप भी सुनते होंगे कि यहाँ साधु लोग खूब दारु, गांजा पीते हैं। खूब अण्ट-सण्ट, गाली-फक्कड़ करते हैं, यह सब बातें नहीं है। यह सब बातें तथाकथित लोगों के विचारधारा की बातें होंगी। यह उन्हीं लोगों तक सीमित है, न कि इस स्थान और इन महापुरुषों से सम्बोधित बातें हैं।

यदि वे महापुरुषों से अच्छी तरह सम्बन्धित होते और उनसे सही ढंग से स्नेह और प्रेम होता तो अल्पायु नहीं होते। इस तरह समाज की बुराई को अपनाते नहीं और न समाज में और लोगों को भी इन बुराईयों की तरफ प्रेरित करते। इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? और हम गर्व करें कि हम साधु हैं, महात्मा है, बड़े सिद्ध के बेटे हैं, यह एक बड़ी विचित्र सी बात लगती है। आज के युग के लिये तो बहुत ही अशोभनीय है। क्योंकि महात्मा और साधु लोगों का एक पथ होता है, जिसे छोड़कर वे जाते हैं और जिस पथ को हम कहते हैं कि यह सज्जनों, महात्माओं का पथ है। इस पर चलकर हम अपने जीवन का उद्धार कर सकते हैं। क्या हमारे लिए यह पथ यही दर्शायेगा। हम गरीब जनता के लिए यह असहनीय है। हम एक-एक रोटी के लिये कौन-कौन कर्म करने को तुल जाते हैं, चोरी, अनेकानेक तरह के नीच कर्म।

इस मठ में ही आज से पाँच छ: वर्ष पहले अपार सम्पदा थी। पर कोई मन्दिर का घण्टा खोल ले गया, तो कोई नगाड़ा, तो कोई चौखट किवाड़ा ही उठा ले गया। पूछने पर मालूम हुआ कि यह सज्जन व्यक्तियों का काम नहीं था। यह उन्हीं लोगों का काम था, जिन्हें गलत आदत पड़ी थी। पीने की आदत थी, खाने की आदत थी, दूसरे की उपेक्षा करने की आदत थी। दूसरे को नीचा दिखाने की आदत थी। ऐसे मनुष्य को हम मनुष्य कैसे कह सकते हैं और वे मनुष्य हैं या नहीं, खुद भी अपने हृदय पर हाथ रखकर कह सकते हैं। मैं महाराज के बारे में जानता हूँ कि ये लोग उनके साथ भी अभद्र व्यवहार किया करते थे। यहाँ बहुत से उनके शिष्य, चेले और उनके स्नेही, साधु-महात्मा जुटे हुए हैं।

बुद्ध के बारे में भी ऐसी ही बातें कही जाती है। जब वे बूढत्रे हो गये तो उन्होंने अपनी परिषद बुलाकर कहा था कि मेरे लिये कोई व्यवस्था कर दें, हमारी नब्बे वर्ष की अवस्था हुई। यह महापुरुष अजगरवृत्ति में रहते थे। उनके पास जो साधु, तथाकथित लोग आते थे। उनके कहीं बाहर जाने पर अपनी वाणियों को दूषित करते थे। अपनी वाणियों को इतना दूषित करते थे कि उनका हृदय दूषित हो जाता था। हृदय दूषित होने से उनकी मन्द बुद्धि हो जाती थी। मन्द बुद्धि हो जाने पर वो कौन-कौन से कर्म करते थे, जो मनुष्य को नहीं करना चाहिये।

हमें समाज में इस तरह की भयंकर बुराईयों से लड़ना हैं हम कैसे उनसे लड़ेंगे, जब बुराई को ही अपने इर्दगिर्द, अपने चारों तरफ रखेंगे तो फिर यह होगा कि हमारे को बुराई पाल रही है और हम बुराई को पाल रहे हैं। महापुरुषों के यहाँ, सज्जनों के यहाँ, अपने देश की जनता को गुमराह करने की मनोवृत्ति नहीं होती है कि उन्हें गलत ढंग से गलत रास्ते पर ले जायें कि उनका स्वास्थ्य और उनकी मौत नजदीक होती जाये। हमारे समाज में एक विचित्र विषमता फैली है। हम जानते हैं कि हम विपत्ति और मौत दोनों का आह्वान करते हैं। विपत्ति का आह्वान इसलिये करते हैं कि अपने खून और पसीने से कमाये धन का दुरुपयोग करते हैं, गलत ढंग से उपभोग करने से स्वास्थ्य खराब होता है। जब स्वास्थ्य खराब होता है तो मौत भी सिरहाने आ जाती है तो हमारा ये आह्वान करने की प्रवृत्ति है, इससे हमें वंचित होना होगा। क्योंकि यदि इससे वंचित न होंगे तो हम समाज के प्रति कोढ़ और पृथ्वी पर भार तुल्य है।

अपने देश की जनता को गुमराह करने वाले साधु नहीं हो सकते। पल्टू की एक वाणी मुझे याद है। वे कहते हैं ''अस्सी वर्ष की बुढ़िया को पल्टू ना पतियाय।'' जब बूढ़े लोग नवयुवकों को दबाते हैं, भयभीत और संकुचित करते हैं तो दु:ख लगता हैं। साथ ही नवयुवकों को भी अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व के बारे में सोचना चाहिये। यदि ठीक से नहीं सोचता है, नहीं निभाता है तो उसका भी जीवन निरर्थक है। हम बूढ़ों से भी नहीं कहते हैं कि आप उनको भयभीत न करें पर उतनी ही मात्रा में जिसमें उनका मापदण्ड ठीक बना रहे। हम उन महापुरुष को, जिनका आज भण्डारा है। इस पुण्य बेला में क्या श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। वो जिस परम्परा को शिरोधार्य कर जिस दु:ख और विपत्तियों में, आततायियों एवं क्रूर कर्मियों के घोर अपमान की वेदना को सहते हुए गुजारे हैं, अपना समय यदि महाराज कीनाराम की कृपा रही तो उस वातावरण को, जो खराब हो चुका था, भविष्य में उसे पुन: लौटाया जायेगा। साथ ही साथ इस पुण्य भूमि में जो भवन और कुण्ड आदि है, जिससे सैकड़ों नर-नारी लाभ उठाते रहे, समाज को सुख-सुविधा, नई दिशा प्राप्त होती रही। उस पर भी ध्यान देने की कोशिश की जायेगी। महाराज जी के प्रति मैं यही कहूँगा कि वो जिस तरह की अपने समय में सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और चारित्रिक थातियाँ हमारे पास छोड़ गये हैं। भरसक कोशिश करूँगा कि उसे निबाहा जाये।

शोक समाचार

अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थल क्रीं कुण्ड एवं श्री सर्वेश्वरी समूह पड़ाव वाराणसी के अनन्य भक्त लक्ष्मीनारायण (मूर्तिकार) का आकस्मिक देहावसान दिनांक 19/02/2015 दिन गुरुवार को हो गया।

पूज्य अघोर संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु एवं पूज्यनीय माँ मैत्रायनी योगिनी का १९वाँ अस्थि कलश स्थापना महोत्सव सकुशल सम्पन्न।

श्री सर्वेश्वरी समूह शाखा आश्रम राजा बाजार धरौली बार्डर सहवाजपुर, कैमूर भभुआ में परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु एवं पूज्यनीया माँ मैत्रायनी योगिनी का १९वाँ स्थापना महोत्सव हर्सोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस पुनीत पर्व पर प्रात: ५ बजे २५ मोटर साइकिल सवार कार्यकर्ताओं ने जयकार एवं कीर्तन करते हुए लगभग ४० किमी० की प्रभात फेरी यात्रा की। समाधिपूजन एवं सफल योनि के पाठ के बाद प्रसाद वितरण का कार्य प्रारम्भ हुआ। दोपहर होते-होते सम्पूर्ण आश्रम प्रांगण नर-नारी बाल-गोपालों से खचाखच भरा हुआ था। ११ बजे से इण्डियन पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़ा ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया। बच्चों एवं विद्यालय के शिक्षकों को अंगवस्त्र तथा मेडल एवं कप द्वारा सम्मानित किया गया। श्री सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें असहायों में कम्बल वितरण किया गया। इस अवसर पर युवा वर्ग ने आश्रम की विशेष सजावट की थी। जिसमें श्री मुन्ना जी, विशाल प्रताप, कमल, विकास प्रताप, देशदीपक, अमन प्रताप पप्पू, दिनेश जी, कमलेश जी आदि का परिश्रम सराहनीय रहा। शाखा मंत्री श्री सूर्यनाथ सिंह ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने वाले समस्त लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

अघोर-एक सुगम उपासना

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

अघोर मत या अघोर साधना एक ऐसे लोगों का विचार साधना है। जो मत मतान्तरों से, पन्थों से अनेक मार्गों से उपर उठा हुआ या कहिए कि परिपक्व सिद्धों को गोपनीय लीला है। वैदिक काल से लेकर आज तक अघोर साधकों की शृंखला चलती आ रही है। इसमें बड़े-बड़े महापुरुष गोता लगा चुके हैं और लगाते रहे हैं।

अभिनवगुप्त से लेकर कीनाराम एवं प्राचीन परम्पराओं और ऋग्वेद के कौशिक सूत्रों में रावण की स्तुति में कपालि चन्द्रशेखर से यही विदित होता है कि औघड़ लोगों का, अघोर साधकों का इस देश में बड़ा आदर एवं सम्मान राज महलों की तरफ से एवं प्रजाओं की तरफ से और प्रान्त के शासकों की तरफ से सदा रहा है।

ऐसा देखने में आता है कि एक शासक ने अपने गुप्तचर को औघड़ के वेष में ही अभेद्य उज्जैन के राजवंशों का गुप्तचरण करने को विदा किया क्योंकि राजवंश इतना विश्वास, इतना सहृदय और अपने इतना नजदीक औघड़ लोगों को पाता था कि कोई बात उनसे छिपा नहीं रहता था। यही कारण है कि दूसरे राजवंशों ने इसका लाभ उठाया और भेद एक दूसरे जगह का औघड़ वेष धारण करके लेते रहे। कर्नाटक प्रदेश के तो प्राय: सभी भागों पर औघड़, अघोरों का पूरा प्रभाव रहा है और वहाँ के राजघरानों में पूज्य रहा है। औघड़ वहाँ के बहुत से सामाजिक सांस्कृतिक स्थानों के संस्थापकों में से रहे हैं और साहित्यों का स्थान जो कर्नाटक में है उनके भी उद्गम स्थान रहे हैं।

हमारे उत्तर भारत के कई एक साधुओं को जो अपने को वैष्णव या आचारी कहते रहे, अघोर क्रियाओं का अवलम्बन लेना पड़ा और वे अघोर साधना के कर्जदार हैं। इनमें तुलसीदास, भास्करानन्द योगी और कबीर की साधनाओं पर इसकी झाँकियाँ मिलती रही हैं, ऐसा उनकी साहित्यों से विदित होता है।

बंगाल में भी बामाखेपा, तैलंग स्वामी, सर्वदानन्द ठाकुर तक अघोर या अघोर साधना से अपने आप को वंचित नहीं रख सके। इसको विस्तार से यदि बताना हो तो एक अलग से ग्रन्थ हो सकता है।

सही मायने में तो अघोर साधना किसी भी प्राणी को नहीं छोड़ा है, विशेषकर मनुष्य को तो सुबह शाम अवश्य ही अघोर दो मिनट के लिये आबोदस्त के समय होना ही पड़ता है। इस दृष्टि से हम शैशव काल से साधक चाहे वे वैष्णव हों, या सन्यासी, वैरागी या किसी भी मत मतान्तर के हों, परिपक्व अवस्था तक अघोर या अघोर साधना से वंचित कदापि नहीं रह सकते, क्योंकि शैशव काल में बनावटी का अवलम्बन तो अवश्य लेना पड़ता है पर परिपक्व अवस्था में जन समूह की परवाह किये बगैर अपने अन्तरंग अन्तराल की ओर साधनायें और साध्य जो तृप्त करता है उसे जब परिपक्व करता है तो वंचित कहाँ रहता है।

इससे कोई पथ, मत, पंथ अपना आँचल पकड़ाये बगैर नहीं गुजर सकता क्योंकि यहीं में का रहस्य उनमें रहस्य होकर बना है, जहाँ तक मुझे आशा है।

अघोर सरल है, सुगम है स्वस्थ है। घोर कठिन प्रज्जवलित, कठोर को कहते हैं। आज वह समय नहीं कि हजारों वर्ष तक तपस्या कर सके। सौ वर्ष की सीमित आयु में ही शुभ, अशुभ कर्म करना है। थोड़े समय में जो सरल सुगम हो, वही आनन्ददायक हो सकेगा। उसी से अपने इष्ट, ईश्वर की प्राप्ति होगी। प्रयाग में बहुत से सज्जन महात्मा आते हैं और इन्हीं सज्जन महात्माओं के आश्रम और कुटियों के पास ईश्वर देखे जाते हैं और मिलते हैं। जो ग्रामीण यहाँ आते हैं इसीलिये आते हैं, कि उनकी बात सुनेंगे जिससे मन मस्तिष्क, स्वास्थ, प्रज्जवलित होगा। साल भर तक भविष्य उज्जवल परिपक्व रहेगा, वहाँ दु:ख नहीं आयेगा।

महात्मा, सज्जन भी इसीलिये आये हैं कि उपकार की भावना हमारे मन में प्रेरित हो परोपकार कैसे हो, दूसरे को सुख शांति कैसे दे सकें, यह बाहर की बातें हमारे अन्दर प्रविष्ट हों और हम यहाँ से जाकर नयी धारा में जीवन को परिवर्तित कर सकें तथा अपने विचार एवं सत्कर्म पास पड़ोस को सुखी कर सकें और उनके दु:ख कलेश में सहायक हों ऐसी प्रेरणा के लिए ही हम सब उत्सुकतापूर्वक यहाँ आये हुये हैं। यही हमें प्राप्त करना चाहिए और यही देना चाहिये। जिस दु:ख से हम दुखी है, जिस विचार से दुखित है और दूसरे भी कलुषित होंगे, वे विचार हम दूसरों पर क्यों लादें।

हमारा आचरण, वाणी संयमी होनी चाहिए यदि ऐसा नहीं होता तो इसका मूल्य नहीं है। मन, कर्म, वचन से चिन्तन भजन होने से वह भगवान के सन्निकट होता है। इस तरह की सन्निकटता होने के लिये कौन कौन गुणों को प्राप्त करना चाहिए, उनका आश्रय होना चाहिए। इसी निमित्त इस प्रयाग क्षेत्र में भ्रमण चिंतन करते हैं। इस पवित्र वायु से मन, चित्त, बुद्धि प्रसन्न रहती है। इस उपलब्धि को अपने जीवन में सदैव के लिए रखना चाहिए और ज्ञान भक्ति के प्रति जो उत्साह हो रहा है, जो धारणायें बन रही हैं, वे उन्हीं विचारों की प्रेरणा है। मनुष्य जीवन का यह भी आहार है, औषधि है। पर यह पथ्य सेवन करने वाले को ही लाभ करती है कुपथ्य करने वाले को लाख औषधी देने पर भी रोग हरण नहीं होता। पथ्य अच्छे कर्म, अच्छे विचार इन्हीं की भावनायें हैं। यह रहेगा तो संतों का थोड़ा वाक्य, मामूली औषधि से लाभ लग जायेगा। आप निरोग होंगे।

हर एक क्षेत्र में व्यक्ति को अपने पौरुष को भी मर्यादा देनी चाहिये। यदि व्यक्ति अपने पुरुष को मर्यादा नहीं देता है, किसी और को ही सौंपता जाता है तो व्यक्ति का हजारों वर्ष का जीवन नहीं है, थोड़े से समय में जो बहुत से कार्य हैं जिसके निमित्त इस पृथ्वी पर व्यक्ति आते हैं, वे कार्य सफलीभूत नहीं होते हैं। इसलिये निर्वाण की तो बात सोचना ही नहीं चाहिये। जीवन में जब आप अपनी कुछ शक्ति प्रयोग करेंगे अपने कुछ चलेंगे तभी ईश्वर गुरु शक्ति प्राप्त होगी। आप सोच लें कोई यहाँ बनारस से आया है, कोई कहीं से आया है और उपस्थित हुए हैं। यदि आप किसी पान की दुकान या सड़क पर ही खड़े रहते तो आप हमें नहीं पाते। इसी तरह देवता ईश्वर या गुरु के भी दरबार में प्रथम अपनी उपस्थिति तब उसकी उपस्थिति होती है। आप प्रत्यक्ष देखेंगे। आपके साथ घर कार्यालय जहाँ कहीं भी रहते हैं, यह घटित होता है। आप की अपनी उपस्थिति आवश्यक है।

आप अपनी उपस्थिति करते नहीं है, और कहते हैं कि गुरु की, माई की उपस्थिति हो जाय। हम गायब रहेंगे और उसकी उपस्थिति चाहेंगे तो वह भी नहीं रहेगा। और हमारा जो लाभ है, हमारी जो कामना है, उसकी पूर्ति नहीं होगी तो हम विश्वास खोयेंगे। न अपना विश्वास दे पायेंगे, न उसका विश्वास प्राप्त कर पायेंगे। आप जानते हैं, साँप बिच्छू का भी मंत्र लेते हैं तो उसमें एक तरह की कसम खाते हैं, उसमें भी एक तरह की किरिया है जिससे की हम उस प्राणी पर विश्वास देते हैं कि तुम्हारे साथ निर्दयता नहीं करूँगा और दूसरे भी तुम्हारे साथ निर्दयता करेंगे तो तुम्हारी रक्षा करूँगा तुम अब इसके विष को हरण करो। मैं सपथ देता हूँ। इसी तरह उस देवता को विश्वास दिलाते हैं कि प्राणिमात्र में हम आपका दर्शन करेंगे तो प्राणिमात्र में हमें अपना विश्वास नहीं देंगे तो उस देवता को कैसे विश्वास होगा और उसका विश्वास कैसे प्राप्त होगा। इस कमी को भी हर समय पूर्ति करने का प्रयास मनुष्य को करना चाहिये। यदि वकील हैं और अपने मुवक्किल के साथ विश्वास नहीं करें और दूसरी पार्टी से मिल जाये तो उसकी भी स्थिति नाजुक हो जायेगी, उनका कोई विश्वास नहीं करेगा।

इसी तरह उस गुरु देवता या देवी का है जिसे हम सब भार सौंप देते हैं। तो आप क्या करते हैं आपका भी उसमें कुछ कर्त्तव्य है। आपका उनसे भी अधिक कर्त्तव्य है जिसे पूरा करने के लिये हम मन जुटावें तब तो वो सहारा मिलेगा, तब तो हम खरीदारी कर सकेंगे। हमारे पास मूल्य भी नहीं इकट्ठा है, हर जगह दरिद्रता ही दिखावें और कहें कि खरीद ले हीरा, जवाहिरात तो कोई मार्केट में आने देगा आपको। पहले मार्केट में आने के लिये अपना विश्वास दिलावें, बाजार में आवें। बाजार क्या है साधु, महात्मा, सज्जन, विद्वान का सत्संग करेंगे, अनेक अच्छे साहित्य पढ़े लिखें, संग्रह करेंगे। आज भी वशिष्ठ कपिल, कणादि से सज्जन साधु व्यक्ति बात करते हैं। आप कहेंगे कि वे किस तरह बात करते हैं? तो वह उनके ग्रन्थ और साहित्य के रूप में, उनके विचार लेकर हम अपने विचारों का समन्वय करते हैं जिससे एक नयी दिशा मिल जाती है। जो मानवीय दृष्टि एवं आध्यात्म की तरफ प्रेरणा देती है।

आप जानते हैं निशा माने घोर होता है। घोर सुगम नहीं होता है। अभी आप उस घोर की सुगमता से पूजा करने जायेंगे, चेष्टा करने जायेंगे। उसके आहट संकेत हमें मिलेंगे। हम देखते हैं कि जब अनुष्ठान में जाते हैं तो जिन व्यक्ति से कोई भी प्रयोजन नहीं है, वे भी वहाँ दौड़ चले जाते हैं। आप किसी चीज के अधिकारी है। पर उसके लिये ज्यादा दौड़ धूप करेंगे। इस प्रकार आप अपने लोभ का परिचय देंगे तो बड़ा भारी उससे भी नुकसान होगा और जिस मात्रा में हमें प्राप्त करना चाहिये नहीं प्राप्त करेंगे। इसी दृष्टि से योगियों ने कहा है कि पूजा, पाठ, साधना का भी एक अन्तिम दिन होता है। जब उसकी भी आवश्यकता नहीं होती है। क्योंकि वह किसलिये करेंगे, क्या कामना है। कोई अच्छा नहीं है। जो हमारे संग रोज बैठने वाले हैं। यदि वे भी लिफाफे में चिट्ठी भरकर हमारे टेबुल पर छोड़ा करें तो वह कैसा विचित्र सा लगेगा। इससे एक तरफ का मनमुटाव सा होने लगेगा, दूरी होने लगेगी।

शेष अगले अंक में

अघोर सूत्र

☞ **अवांछित विचारों को अपने मस्तिष्क में न लावें। जब इनसे हम लोग वंचित होंगे तो हम जिस निमित्त आये हैं या यहाँ आने का हमारा जो भी उद्देश्य है, वह सफल होगा। ऐसा करके ही हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी